देशबन्धु

वर्ष-27 । अंक-257 । भोपाल, रविवार, 18 सितम्बर 2016 । पृष्ठ-8+4 । मूल्य-2.00 रुपए

अब, इरानो भी सम्मान के साथ जीवन जी सकती है...

• रूबी सरकार

भोपाल, देशबन्धु। ढोलक बस्ती जाटखेड़ी भोपाल में स्थित एक बस्ती, जहां परिवार में कोई भी पढ़ा-लिखा नहीं है, 2014 में उदय संस्था द्वारा इस बस्ती में एक सर्वे कराया गया था, जिसमें यह यह जानकारी सामने आई कि ढोलक बस्ती के 6 से 14 साल के 80 बच्चे शिक्षा की मुख्य धारा से नहीं जुड़े है। यदि बस्ती में आधारभूत सुविधाओं कि बात करें, तो यहां लोग सभी सुविधाओं से महरूम हैं। विपरित परिस्थितियां इस समुदाय विशेषकर बच्चों को हाशिए पर लाकर खड़ा कर देती है। इसलिए संस्था ने ऐसे बच्चों के लिए नोन फोरमल शिक्षा सेन्टर खोलने का फैसला लिया।

दो साल पहले इरानो उर्फछोटी, उम्र 13 वर्ष प्राय: कबाड़, जैसे प्लास्टिक, लोहा या अन्य चीजें रोज बीनते देखी जाती थी, जिससे उसे 50 से 80 रुपये तक मिल जाते थे। वह अक्सर समाज की हीन दृष्टि एवं भेदभाव का शिकार होती थी और यही इरानो की दिनचर्या बन चुकी थी। उसका पढ़ाई से दूर-दूर तक कोई वास्ता नहीं था। पढ़ाई का महत्व, तो उसे पता भी नहीं था। इरानो के पिता संगीत का वाद्य यंत्र ढोलक को बनाकर बेचने के

लिए दूसरे राज्य या शहरों में 2से 3 महीनों के लिए चले जाते हैं और कभी-कभी लम्बे समय तक लौटकर नहीं आते।

इरानो मूलत: उत्तरप्रदेश की जिला वाराबंकी की रहने वाली है। रोजगार की तलाश में उसके पिता मध्यप्रदेश आ गए हैं। इरानो के परिवारों को लगभग 4 बार भोपाल के विभिन्न स्थानों पर विस्थापित किया जा चुका है। उसकी मां शहजादी बानो उसे स्कूल में देखना चाहती थी, लेकिन आर्थिक तंगी ने ऐसा नहीं होने दिया। जब इरानो को पता चला, कि उसकी बस्ती में नोन फोरमल ऐजुकेशन सेन्टर खुला है तब उसने उसमें जाने का फैसला किया, ताकि वह भी शिक्षा के महत्व के बारे जान सके। उदय समाज सेवी संस्था ने बाल शिक्षा पर बहुत से जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया, अपने सेन्टर के माध्यम से बाल मजदूर बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने की कोशिश की, इरानो ने एक साल तक अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र में पढ़ाई की। बाद में संस्था के सदस्यों ने उसका दाखिला शासकीय प्राथमिक शाला में करवा दिया। उसका तो खुशी का ठिकाना ही नहीं रहा। अब स्कूल के शिक्षक भी इरानो को बेहतर शिक्षा पाने में मदद कर रहे है, ताकि उसे भविष्य में एक बेहतर जीवन मिल सके। उसके माता-पिता भी अपनी बेटी को स्कूल जाते देखकर बहुत खुश होते है।

संस्था की सचिव लिज़ी थोमस बताती हैं, कि वर्ष 2014 की रिपोर्ट के अनुसार प्रदेश में 4 फीसदी बच्चे आज भी स्कूल में नहीं हैं, वह या तो ड्रॉपआउट या फिर उन बच्चों ने स्कूल में दाखिला ही नहीं लिया। अफसोस इस बात का भी है, कि पहली कक्षा के 60 फीसदी से अधिक बच्चे अक्षर तक पढ़ नहीं पाते, यह शिक्षा की गुणवत्ता पर सवाल खड़े करता है। उल्लेखनीय है, कि उदय समाज सेवी संस्था पिछले 12 साल से मध्यप्रदेश के 3 जिलों में एवं भोपाल के दो वार्ड नई बस्ती जाटखेड़ी एवं बागमुगालिया में (वार्ड 52-53) रहने वाले गरीब परिवारों के लिये कार्य कर रही है।